कड़कड़ाती ठंड में उजाड़े जा रहे आदिवासियों के घरोंदे

वन विभाग ने उड़ाई वन अधिकार कानून की धज्जियां, आक्रोशित आदिवासियों ने एसडीएम पन्ना को सौंपा ज्ञापन

पन्ना, 12 दिसम्बर का. वन क्षेत्र में वर्षों से निवास कर रहे आदिवासियों को इस कड़कड़ाती ठण्ड में बेघर किया जा रहा है. गरीब आदिवासियों के घरोंदों को उजाड़कर वन विभाग द्वारा वनाधिकार कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं. जिससे पीड़ित आदिवासियों में भारी आक्रोश है. आक्रोशित आदिवासियों ने आज पन्ना पहुंचकर समाजसेवी युसुफ बेग के नेतृत्व में एसडीएम पन्ना को ज्ञापन सौंपा है.

उल्लेखनीय है कि पूर्व में [illegible] आदिवासियों जिन्होंने वन अधिकार कानून के अन्तर्गत पट्टे दिए जाने के लिए आवेदन किए थे, परन्तु उन आवेदनों पर गौर किए बगैर [illegible] निवासी आदिवासियों को जबरन वन विभाग द्वारा हटाया

जा रहा है. कलेक्टर को सौंपे गए ज्ञापन में मांग की गई है कि पन्ना [illegible] सभी आदिवासी द्वारा कब्जा [illegible] जिला पन्ना की भूमि पर काबिज हैं व वर्षों से खेती और मजदूरी कर अपना जीवकोपार्जन करते हैं। वन विभाग के कर्मचारियों के द्वारा हम परम्परागत अनुसूचित जन जाति के वन वासियों को वर्षों से खदेड़ा जा रहा है, और हमारे झोपड़ों को गिराया जा रहा है जिससे हम आदिवासी वन वासियों के घरोंदे तोड़े जा रहे हैं जिससे इस भीषण ठंड में बगैर छत के हो गए हैं और अपने बच्चों के साथ ठंड में महिलाओं और बच्चों को लेकर दर दर भटकने को मजबूर हैं. हम सभी आदिवासियों ने वन अधिकार कानून के अन्तर्गत पट्टे के लिये आवेदन किया है इनके हम अधिकारों को [illegible] कर और बिना कोई सूचना दिए वन अमले द्वारा हटाये जाने की कार्यवाही की जा रही है जो सरासर अनुचित है। इस आशय का ज्ञापन कलेक्टर के नाम एसडीएम [illegible] को सौंपा गया. एस.डी.एम पन्ना ने जाँच का आश्वासन देकर मामले को शांत करने का प्रयास किया जा रहा है. आदिवासियों का कहना है कि मरते दम तक हम अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे इनका नेतृत्व कर रहे समाजसेवी युसुफ बेग, एम.एल.विश्वकर्मा, [illegible] आदिवासी वनवासी महासंघ एवं समाजसेवी राहुल निगम ने इनकी लड़ाई में साथ देते हुए प्रशासन को आगाह किया गया है कि अगर इन्हें यहां से बेघर किया गया तो इसके परिणाम गम्भीर होंगे और सभी मिलकर इन आदिवासियों के हक में जिला प्रशासन एवं वन विभाग के विरूद्ध आंदोलन छेड़ने को मजबूर हो जायेंगे. ज्ञापन सौंपते वक्त में सैकड़ों आदिवासी मौजूद थे.